आज़ादी का
अमृत महोत्सव

Impact Factor : 5.973

ISSN : 2395-728X

Shiksha Shodh Manthan

A Half Yearly International Peer-Reviewed Refereed Journal of Education

Vol. 11, No. 1 , April 2025

SHIKSHA SHODH MANTHAN
Dwell Deep & Say

Shiksha Shodh Manthan

A Half Yearly International Peer-Reviewed Refereed Journal of Education

सोशल मीडिया का विद्यालय जाने वाली छात्राओं पर प्रभाव

प्रो. राजीव कुमार सिंह* एवं रेनू पवार **

* विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, डी0वी0एस0 कालेज, कानपुर (उ.प्र.)

**शोध छात्रा समाजशास्त्र विभाग, डी0वी0एस0 कालेज, कानपुर (उ.प्र.)

सारांश

वर्तमान में विश्व का कोई भी ऐसा देश नही है जो सोशल मीडिया से अनजान हो । आज सोशल मीडिया एक ऐसा मंच बन गया है जिसने संपूर्ण विश्व को एक ग्लोबल गॉव बना दिया है। हम जब चाह जहॉ चाहे वहीं से बैठे–बैठे सोशल मीडिया के विभिन्न Apps जैसे– Facebook, Whatsapp, Instagram, Snapchat, Telegram आदि के माध्यम से अपने नाते रिश्तेदारो मित्रो व प्रिय जनों से जुड सकते हैं। चाहे वे देश या विदेश में कहीं पर भी हो। आज के युग में सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया हैं। यह हमारे दिन प्रतिदिन के जीवन को विविध प्रकार से प्रभावित करता है यही कारण है कि दिन–प्रतिदिन हमारी निर्भरता सोशल मीडिया पर बढ़ती जा रही है। सोशल मीडिया के विभिन्न Apps नव युवक युवातियों व प्रमुख रुप से विद्यालय जाने वाले छात्र छात्राओं को किस प्रकार व किस सीमा तक प्रभावित कर रहे हैं यह बात हम इस शोध पत्र के माध्यम से जानने का प्रयास करेंगे। इस शोध पत्र लेखन का मुख्य उद्देश्य विद्यालय जाने वाली छात्राओं को सोशल मीडिया किस प्रकार से प्रभावित कर रहा है सोशल मीडिया का उपयोग उनके लिए कितना सार्थक व उपयोगी है व उनका मार्गदर्शन करने में कितनी मात्रा में सहायक है आदि के बारे मे जानने का प्रयास करेंगे क्योंकि इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भी छात्राओं के जीवन में सोशल मीडिया की उपयोगिता है

संकेत शब्द :– *सोशल मीडिया, सोशल मीडिया नेटवर्क, सोशल मीडिया साइट्स, सोशल मीडिया Apps, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, इंटरनेट का जाल या नेटवर्क संजाल।*

प्रस्तावना :–

सोशल मीडिया हमारे जीवन का आज एक ऐसा ऐहम हिस्सा बन गया है जिसे हम नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं और चाह कर भी मुहॅ नहीं मोड सकते हैं। पारुल रोहतगी नव भारत टाइम्स (2020) सोशल मीडिया आज के समय में एक ऐसा सशक्त मंच बन चुका है जिस पर विभिन्न आयु, वर्ग, धर्म, जाति, लिंग व भाषा भाषी लोग विविध रुपों मे सक्रिय हैं।लोग अपने भावो व विचारों को सशक्त रुप से अभिव्यक्त करनें में सोशल मीडिया का सहारा लेते है और सोशल मीडिया भी इस कार्य में एक एहम मंच की भूमिका निभाता हैं। आज के समय में लोग अपने उन भावों व विचारो को भी बिना झिझक सोशल मीडिया द्वारा व्यक्त कर सकते है जिन्हें उन्हे दूसरो के सामने प्रत्यक्ष रुप से कहने में कठिनाई का अनुभव होता हैं। साथ ही लोग अपनी भावो की अभिव्यक्ति को और भी अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए सोशल मीडिया Apps पर उपलब्ध विभिन्न प्रकार के चित्रों, ऑडियो, वीडियों, मीम्स, कार्टून, इमोजी व स्टिकर आदि के माध्यम से अपनी बातो को दूसरे व्यक्ति के समक्ष आत्यन्त ही प्रभापूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने मे सक्षम हैं।

अनुप्रिया श्रीवास्तव (2022) अपने लेख युवा महिला एंव सोशल मीडिया के द्वारा यह बताती है कि सोशल मीडिया आज युवाओं की पहली पसंद बन चुका है वे और कुछ भी भूल सकते है पर सोशल मीडिया नी मिलले वाले अपडेट को चेक करना कभी नही भूलते जो उन्हे विभिन्न Apps - Instagram, Facebook, Whatsapp, Telegram, Youtube व Snapchat के माध्यम से समय–समय पर प्राप्त होते रहते हैं।

यही कारण है कि वर्तमान समय मे नव युवक व युवा छात्र–छात्राओ मे सोशल मीडिया के प्रति झुकाव व निर्भरता दोनो ही दिन – प्रतिदिन बढती ही जा रही है। प्रमुख रुप से covid 19 के बाद – छात्र एव छात्राओं की निर्भरता अपने शिक्षक – शिक्षकाओं व अभिभावको को अपेक्षा सोशल मीडिया के विभिन्न शैक्षिक Apps जैसे दीक्षा App सक्षम App यूट्यूब आदि पर अधिक होती जा रही है इस बात की बिना जॉच कि जो जानकारियॉ उनको सोशल मीडिया के विभिन्न शैक्षिक Apps के द्वारा प्रदान की जा रही है वे कितनी सही व तार्किक हैं।

किसी भी उत्पाद या सेवा का सोशल मीडिया के विभिन्न चैनलो द्वारा इतने प्रभावशाली ढग से उसका व प्रसार किया जाता है कि लोग उन वस्तुओं की उपयोगिता व अनुपयोगिता को जॉच परखे बिना ही उस वस्तुओं व सेवाओं का उपयोग बेझिझक करने लगते है (JYOTI 2017)

उपयुक्त तथ्यो को ध्यान मे रखकर व सोशल मीडिया की दिनो–दिन बढती लोकप्रियता के कारण शोधर्थिनी के मन में विद्यालय जाने वाली किशोर बालिकाओ विशेष रुप से नवीं व दसवीं कक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के ऊपर सोशल मीडिया के पड़ने वाले प्रभाव को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई

अतः यह शोध पत्र मुख्य रुप से किशोर बातिकाओ (छात्राओं) पर सोशल मीडिया के पडने वाले प्रभावो को जानने हेतू पूर्ण रुप से समर्पित है।

उद्देश्य :–

1. छात्राओं पर सोशल मीडिया के पड़ने वाले विभिन्न सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावो का अध्ययन करना
2. इस बात का पता लगाना (अध्ययन करना) कि सोशल मीडिया छात्राओं की रचनात्मकता व सृजनशीलता में कहॉ तक सहायक है।
3. सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अधिक समय बिताने के कारण छात्राओं को अपने अध्ययन में ध्यान केंद्रित करने में होने वाली कठिनाईयो का पता लगाना
4. सोशल मीडिया के उपयोग के कारण छात्राओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले शारीरिक व मानसिक प्रभावो का अध्ययन करना
5. इस बात का पता लगाना कि जो जानकारियॉ छात्राएँ सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट्स की सहायता से प्राप्त कर रही है वे कितनी सार्थक व उपयोगी हैं।

पद्धतिशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य :–

पद्धति शास्त्र का सामान्य अर्थ तथ्यो के संकलन एवं विश्लेषण की उन विधियों व तकनीकियो के समूह से लगाया जाता है जो कि किसी विशिष्ट विषय की शाखा में प्रयोग किये जाते हैं।

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है इस शोध प्रारूप के अंतर्गत किसी अध्ययन विषय के बारे में यथार्थ व वास्तविक तथ्य एकत्रित कर उन्हे एक विवरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। और यही हमारे शोध का मुख्य लक्ष्य भी है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थिनी द्वारा कानपुर महानगर के दो इण्टर कॉलेजो क्रमस :–

1. सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज– विजय नगर कानपुर (राजकीय विद्यालय)
2. माउण्ट कार्मेल इण्टर मीडिएट कालेज शारदा नगर कानपुर (प्राइवेट) कॉलेजों में अध्ययन करने वाली कुल–220 छात्राओं में से नियमित अंकन विधि द्वक्षरा कुल 50 छात्राओं का चयन समग्र में से अध्ययन की इकाइयों के रूप में किया गया है।

शोधार्थिनी द्वारा अपने शोध कार्य को पूरा करने के लिए तथ्य संकलन के प्राथमिक एंव द्वितीय दोनो प्रकार के स्त्रोतों को अपनाया गया है।

सामाजिक अनुसंधानो में तथ्यों के संकलन हेतु प्रमुख प्रविधियॉ – अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूचि प्रश्नावली अंतरवस्तु विश्लेषण एंव अनुमापन प्रविधियों आदि प्रमुख है।

इन प्रविधियों में से शोधार्थिनी द्वारा अवलोकन साक्षात्कार अनुसूचि एंव अनुमान प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण एंव निष्कर्ष :–

अपना क्षेत्रीय कार्यपूर्ण कर लेने के पश्चात शोधार्थिनी द्वारा प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करने पर कुछ महत्वपूर्ण तथ्य सामने आये है जो कि इस प्रकार से है –

शोधकार्य के दौरान शोधार्थिनी ने यह पाया कि 76 प्रतिशत छात्राओं पर सोशल मीडिया सकारात्मक प्रभाव डालता है। 20 प्रतिशत छात्राओं पर सोशल मीडिया का मिला–जुला प्रभाव पाया गया जबकि केवल चार प्रतिशत छात्राएँ ऐसी भी थीं जिनका मानना था कि सोशल मीडिया उनके ऊपर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है।

अधिकतर छात्राओं 80 प्रतिशत का यह मानना है कि सोशल मीडिया के विभिन्न Apps की सहायता है हम अपनी रचनात्मकता व सृजनशीलता में वृद्धि कर सकते है। सोशल मीडिया एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जो हमारी रूचि के अनुसार हमें विविध प्रकार की समाग्री उपलब्ध कराता है व साथ ही हम अपनी अमुक कला को और भी अधिक निखार भी सकते है। वर्चुअल कक्षाएँ इसका एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी खमियों को जानकर उनका स्वंय ही निदान कर सकते है जैसे क्लासिकल डांस क्लासेस, विभिन्न वाद्य यंत्रो (जैसे–तबला हारमोनियम गिटार आदि) के प्रशिक्षण से संबंधित क्लासेस, वेस्टर्न डांस क्लासेस, आर्ट & क्राफ्ट की क्लासेस, सिंगिग क्लासेस, कांफेक्शनरी & बेंकिग की क्लासेस आदि। 15 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि सोशल मीडिया की सृजनशीलता में कोई खास भूमिका नहीं है। जबकि 5 प्रतिषत छात्राएँ इस बात से अनजान पाई गई कि सोशल मीडिया भी छात्राओं की कलात्मकता व रचनात्मकता में वृद्धि करने मे सहायक है।

अध्ययन के दौरान यह बात भी सामने आई कि 50 प्रतिशत छात्राएँ यह मानती हैं कि सोशल मीडिया का अधिक उपयोग हानिकारक है क्योकि यह हमारा ध्यान भटकाता है और अध्ययन करने का समय को चुरा लेता है। यह हमें एक ऐसा विश्व प्रदान करता है जिसमें हम खो जाते है और पता ही नहीं चलता कि हमारे दो से तीन घण्टे बर्बाद हो गये है। 35 प्रतिशत छात्राओं का यह मानना है कि वे सोशल मीडिया के विभिन्न Apps पर सक्रिय रहने के साथ ही साथ अपनी पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान केंद्रित करती है। उन्हें अपने अध्ययन में सोशल मीडिया के द्वारा कोई भी बाधा नही दिखाई देती है। वहीं 15 प्रतिशत छात्राएँ सोशल मीडिया व अध्ययन में आने वाली कठिनाइयों के प्रति तटस्थ पाई गई।

अध्ययन के दौरान 40 प्रतिशत छात्राओं ने यह बताया कि सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने के कारण उनको विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं जैसे – अनिद्रा , शरीरिक थकावट चिड़चिड़ापन, एकांतवास, आँखों की रोशनी कम होना पढ़ने व ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई का सामना करना , चक्कर आना पौष्टिक भोजन न करके Fast Food आदि के प्रति अधिक आकर्षित होना, कई बार छात्राएं जाने अनजाने में कुछ शरारती तत्वों द्वारा साइबर बुलिंग का शिकार भी हो जाती हैं। जिसके परिणाम स्वरूप छात्र अवसाद में चले जाते है। और कई मामले ऐसे भी प्रकाश में आये हैं। जिसमें छात्र–छात्राएं आत्महत्या तक कर लेते है। 50 प्रतिशत छात्राओं ने यह माना कि उनको ऐसी कोई भी शरीरिक व मानसिक परेशानियों का समाना नही करना पड़ा। जबकि 10 प्रतिशत छात्राएँ ऐसी थी जो इस बात से अनजान पाई गई कि सोशज मीडिया के अति उपयोग के कुछ स्वास्थ्य संबंधी नकरात्मक प्रभाव भी हो सकते है।

अधिकतर छात्राएँ 80 प्रतिशत का यह मानना है कि यदि हमें कोई नई जानकारी प्राप्त करनी है तो हम गूगल सर्च का उपयोग करते हैं और उसके द्वारा प्रदान की गई जानकारियाँ कुछ अपवाद को छोड़कर अधिकतर सही व सटीक होती हैं। जबकि 20 प्रतिशत छात्राएं यह मानती हैं कि गूगल द्वारा प्रदान की गई जानकारियाँ कई बार सही व सटीक न होकर बहुत भ्रमित करने वाली होती है। हम पूछना या ढूढना कुछ चाहते है पर सर्च रिजल्ट कुछ और ही परिणाम दिखाता है अर्थात त्रुटिपूर्ण, गलत व भ्रामक सूचनाएँ प्रदान करता है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त तथ्यो के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि इसमें कोई दो राय नहीं है कि सोशल मीडिया आज हम सभी की एक आवश्यक आवश्यकता बन गया है। बात यदि छात्रों की की जाए तो यह उनको नई–नई जानकारियो व सभावनाओं का एक असीमित आसमान प्रदान करता है जिसका बुद्धिमानी व तर्कसंगता से उपयोग करके आज के युवा छात्र–छात्राएँ अपने भविष्य को सवारने में कर सकते है। सोशल मीडिया पर नई नई जानकारियां का असीमित भण्डार है। बस ध्यान देने वाली बात यह है कि उसको सत्यता की कसौटी पर जॉच लिया जाए कि वे उनके लिए कितनी उपयोगी व सहायक है। अधिकतर छात्राएँ यह मानती हैं कि सोशल मीडिया के नुकसान कम और फायदे अधिक है। क्योंकि हम घर बैठे कोई भी जानकारी आसानी से हासिल कर सकते है। हम देश विदेश में बैठे अपने नाते रिश्तेदारों मित्रों व प्रियजनों से मिनटो में जुड सकते है।

अति किसी भी चीज की खराब ही होती है चाहे वह सोशल मीडिया हो या और कुछ भी इसलिए छात्र–छात्राओं को सोशल मीडिया का बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए। और अभिभावकों का भी यह उत्तरदायित्व है कि वे भी अपने बच्चों की सोशल मीडिया की गतिविधियों पर बराबर नजर रखे व आपसी संवाद कभी बंद न करें। स्कूलों द्वारा भी समय–समय पर सोशल मीडिया से संबधित संगोष्ठियों का आयोजन किया जाए। जिसके द्वारा छात्रों को सोशल मीडिया के द्वारा होने वाले लाभ व हानि से परिचित कराया जा सके। साथ ही ऐसे शैक्षिक व ज्ञानवर्धक Apps के बारे में भी छात्राओं को जानकारी प्रदान की जाए जो उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हो।

संदर्भ :–

Agarwal B.C and Malek M.R (1986) Television in kheda A Sociological Evaluation on SITE.

भट्ट अंशू (2021) Social networking sites a sociological study of post graduate students of A.M.U. Aligarh.

भारती एन0आवेरी (2020) The effect of Television on rulal adolescents a sociological study.

Chawdury ASIM (2011) Electronic Media and Cultures of Communications A sociological study.

चौधरी रुचिका (2019) महिला साइबर अपराध के प्रति छात्राओं के दृष्टिकोण का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।

Dr. Shukla Ramesh Chandra (2005) Impact of Door drshan on Educated Women of Lucknow city – A Sociological Analysis.

Jyoti (2017) Social Advertising health-a sociological study of Public service campaigns programmes for rural India.

कनौजिया सुनीता (2019) सोषल साइट्स का युवाओं पर प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।

Rohatgi Parul (2020)New Bharat Times An Editional Article on Social Media Youth.

श्रीवास्तव अनुप्रिया (2020) युवा महिलाएँ और सोशल मीडिया उपयोग प्रस्तर एवं प्रभाव पर आधारित एक समाज शास्त्रीय अध्ययन।

****